परमाणु बिजली घर और सेहत

डॉ. संघमित्रा और डॉ. सुरेन्द्र गाडेकर

परमाणु प्रतिष्ठान दुनिया भर में यह आकलन करने में लापरवाही बरतता है कि उसके क्रियाकलापों का पर्यावरण व सेहत पर क्या असर होता है। उचित आकलन तो छोड़िए, कई देशों में तो इस बाबत आंकड़े भी इकट्ठे नहीं किए जाते। और इस तरह के आंकड़े लोगों को बताना तो कहीं नहीं किया जाता है। भारत में भी बरसों तक परमाणु सम्बंधी बहस निरर्थक ही थी क्योंकि दोनों ही पक्षों के पास परमाणु गतिविधि के प्रभाव सम्बंधी पर्याप्त आंकड़े उपलब्ध नहीं थे। जब भी कोई नया परमाणु संयंत्र स्वीकृत होता, तो आसपास के इलाके में काफी विरोध होता मगर इन विरोध में आंकड़ों की पैनी धार नहीं होती थी।

रावतभाटा परमाणु बिजली घर के पास का एक गांव झरझनी

हमने सितम्बर 1991 में फैसला किया कि राजस्थान में कोटा के पास स्थित रावतभाटा परमाणु संयंत्र के प्रभावों का एक सर्वेक्षण किया जाए। रावतभाटा का परमाणु बिजली घर देश का पहला ऐसा संयंत्र था - भारत में ही निर्मित कैन्डू किस्म का संयंत्र। कैण्डू यानी कनाडियन ड्यूटीरियम-यूरेनियम आधारित संयंत्र। चूंकि भारतीय परमाणु कार्यक्रम कैन्डू परमाणु भट्टी पर आधारित था, इसलिए यही रिएक्टर देश में प्रोटोटाइप बना। रावतभाटा स्थल का चयन 1961 में हुआ था और यूनिट 1 पर काम 1964 में कनाडा के सहयोग से शुरू हुआ। यह इकाई 1972 में क्रिटिकल अवस्था में पहुंची और 1973 में इसे एक व्यावसायिक इकाई घोषित कर दिया गया। दूसरी इकाई पर काम 1967 में शुरू हुआ और 1981 में यह भी एक व्यावसायिक इकाई के रूप में काम करने लगी। इन दो परमाणु भट्टियों के अलावा इस इलाके में एक और औद्योगिक इकाई भारी पानी संयंत्र है जो इन्हीं परमाणु भट्टियों के लिए भारी पानी का उत्पादन करता है।

तालिका 1
बीमारी का पैटर्न

	नज़दीकी गांव		दूरस्थ गांव	
कुल लोग	2860		2544	
थोड़े समय का बुखार	137	(4.8%)	117	(4.6%)
सांस की दिक्कत	71	(2.5%)	52	(2.0%)
लगातार खांसी	103	(3.6%)	60	(2.4%)
लंबे समय का बुखार	120	(4.2%)	41	(1.6%)
बदन दर्द	126	(4.4%)	28	(0.9%)
जोड़ों का दर्द	116	(4.1%)	56	(2.2%)
पाचन की समस्या	360	(12.9%)	151	(6.0%)
कमज़ोरी	147	(5.1%)	96	(3.8%)
चर्म रोग	208	(7.3%)	75	(2.9%)
ट्यूमर	30	(1.1%)	5	(0.2%)
आंखों की दिक्कत	51	(1.8%)	20	(0.8%)
कंजंक्टिवाइटिस	16	(0.6%)	12	(0.5%)
मोतियाबिंद	21	(0.7%)	8	(0.3%)